

শ্রীঃ
শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায় নমঃ
শ্রীমান্ বেক্টনাথার্যঃ করিতাকিঁককেসরী।
বেদান্তাচার্যরর্যো মে সন্নিধত্তাং সদা হৃদি ॥

শ্রীভ্গুসংহিতোক্ত
॥শ্রীসুদর্শন করচম্ ॥

This document has been prepared by*
Sunder Kidambi
with the blessings of
শ্রী রঙ্গরামানুজ মহাদেশিকন্
His Holiness śrīmad āṇḍavan of śrīraṅgam

*This was typeset using Bengali for T_EX.

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
॥ श्रीसुदर्शन करचम् ॥

प्रसूद भगवन् ब्रह्मन् सर्वमन्त्रज्ञ नारद!।
सौदर्शनं तु करचं परित्त्रं ब्रुहि तत्त्वतः ॥ १ ॥

नारद उवाच
शृणुष्वेह द्विजश्रेष्ठ! परित्त्रं परमादभूतम्।
सौदर्शनं तु करचं दृष्टादृष्टार्थसाधकम् ॥ २ ॥

करचस्यास्य ऋषिर्ब्रह्मा हृन्दानुष्टुप्ता स्मृतम्।
सुदर्शनमहारिषुर्देवता संप्रचक्षते ॥ ३ ॥

ह्रां बीजं शक्ति रत्रोत्ता ह्रीं त्रेणं कीलकमिष्यते।
शिरससुदर्शनः पातु ललाटं चक्रनायकः ॥ ४ ॥

घ्राणं पातु महादैत्यरिपुरव्यात् दृशौ मम।
सहस्रारशश्रुतिं पातु कपोलं देवबल्लभः ॥ ५ ॥

विश्वात्मा पातु मे रक्तं जिह्वां विद्यामयो हरिः।
कंठं पातु महाज्वालः स्कन्धौ दिव्यायुधेश्वरः ॥ ६ ॥

भ्रुजौ मे पातु विजयी करौ कैटभनाशनः।
षट्कोणसंस्थितः पातु हृदयं धाम मामकम् ॥ ७ ॥

मध्यं पातु महारीर्यः त्रिणेत्रो नाभिमण्डलम्।
सर्वायुधमयः पातु कटिं शोणिं महाद्यूतिः ॥ ८ ॥

सोमसूर्याग्निनयनः ऊरु पातु च मामकौ।
गुह्यं पातु महामायो जानुनी तु जगतपतिः ॥ ९ ॥

जङ्घे पातु ममाजस्रं अहिर्बुध्न्यः सुपूजितः।
गुलफौ पातु विशुक्तात्मा पादौ परपुरञ्जयः ॥ १० ॥

सकलायुधसंपूर्णो निथिलाङ्गं सुदर्शनः।
य इदं करचं दिव्यं परमानन्ददायिनम् ॥ ११ ॥

সৌদর্শনমিদং যো বৈ সদা শুদ্ধঃ পঠেন্নরঃ।
তস্যার্থসিদ্ধির্বিপুলা করস্থা ভবতি ধ্রুবম্ ॥ ১২ ॥

কৃশ্মাণ্ডচণ্ডভূতাদ্যাঃ যে চ দুষ্টা গ্রহাসম্মতাঃ।
পলায়ন্তেনিশং ভীতাঃ বর্মণোস্য প্রভাবতঃ ॥ ১৩ ॥

কুষ্ঠাপস্মারগুন্মাদ্যাঃ ব্যাধয়ঃ কর্মহেতুকাঃ।
নশ্যন্ত্যে তন্মদ্রিতাম্বুপানাত্ সপ্তদিনাবধি ॥ ১৪ ॥

অনেন মদ্রিতাং মৃতস্নাং তুলসীমূলসংস্থিতাম্।
ললাটে তিলকং কৃত্বা মোহয়েত্ ত্রিজগন্নরঃ।
বর্মণোস্য প্রভাবেন সর্বানকামানরাপ্নুয়াত্ ॥ ১৫ ॥

॥ ইতি শ্রীসুদর্শন করচং সমাপ্তম্ ॥